व्याख्या सहित उत्तर

1. (क) वर्तमान समय में राष्ट्र एक भौगोलिक सीमा-रेखा से संबंधित होता है, जिसमें निवास करने वाले लोग भिन्न-भिन्न संस्कृति तथा विविध भाषा-भाषी हो सकते हैं।

(ख) भारत में राष्ट्रीयता की सूक्ष्म कड़ी 'विविधता के बीच एकता' का होना है। यही एकता राष्ट्रीयता तथा राष्ट्र की रक्षा करने में सक्षम है।

(ग) लेखक का मानना है कि एकता ही राष्ट्र की रक्षा करने का उत्तम तरीका है। राष्ट्र की रक्षा में ही जनता का अस्तित्व सुरक्षित होता है, इसलिए देशवासियों को राष्ट्रीय एकता के प्रति सदा सजग रहना चाहिए।

(घ) राष्ट्रीय चरित्र का विकास न हो पाने के कारण सारे राष्ट्र में अराजकता, भ्रष्टाचार और असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हो गई है। नेता, व्यापारी आदि समर्थ लोग स्वार्थों की सिद्धि के लिए आम जनता का शोषण करते हैं।

(ङ) भारतीय समाज में व्याप्त जातिवाद, संप्रदायवाद, अलगाववाद, भाषा के नाम पर विवाद इत्यादि राष्ट्रीय एकता की वृद्धि में अवरोधक तत्त्व हैं। इन संकीर्ण विचारों के कारण राष्ट्रीय एकता को महत्त्व नहीं मिल पाता तथा असंतुलन की स्थिति सामने आती है।

(च) एक निश्चित भौगोलिक सीमा के भीतर विविध संस्कृतियों के लोगों का एकसाथ निवास करना 'विविधता में एकता' कहलाता है।

(छ) प्रस्तुत गद्यांश का सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक 'राष्ट्रीयता की भावना' हो सकता है।

2. (क) कवि जीवन में आने वाले सुख-दुःख के अस्तित्व से परिचित है। उसे इस बात का आभास है कि निरंतर सुख या दुःख का जीवन में रहना असंभव है।

(ख) इस पंक्ति का भाव यह है कि मनुष्य-जीवन की शाश्वत प्रवृत्ति को स्पष्ट करता है। वह मानता है मानव-जीवन में 'हास' अर्थात् हँसी तथा दुःख आते-जाते रहते हैं।

(ग) सुख-दुःख के मधुर मिलन से जीवन परिपूर्ण होता है। जीवन में आने वाले सुख और दुःख मनुष्य को जीना सिखाते हैं। इससे मनुष्य का जीवन पूर्ण होता है।

(घ) जग अधिक सुख और अधिक दुःख दोनों से पीड़ित है, क्योंकि अधिक सुख और अधिक दुःख दोनों ही मनुष्य के लिए उचित नहीं हैं। इन दोनों का सामंजस्य जीवन में अनिवार्य है।

अथवा

(क) प्रस्तुत काव्यांश में कवि अपनी नियति को, अपने भाग्य को ललकार रहा है और उसके ललकारने में अत्यंत दृढ़ता है, जो उसकी भाव-भंगिमा से प्रतीत हो रहा है।

(ख) प्रस्तुत काव्यांश के अनुसार, 'आत्मज्ञान' ने कवि के पुरुषार्थ को जाग्रत कर दिया। सत्य का आभास होते ही वह अपनी मुक्तता एवं बंधनहीनता को पहचान गया है।

(ग) भिखारी, कवि के जीवन को कहा गया है, क्योंकि कवि का जीवन नियति (भाग्य) की कृपा और करुणा का भिखारी बना हुआ था। उसे स्वयं का आत्मज्ञान नहीं हुआ था।

(घ) काव्यांश के आधार पर कहा जा सकता है कि 'नियति' शब्द से कवि का आशय मनुष्य को उसके कर्म से, उसके पुरुषार्थ से दूर रखने वाली उस मिथ्या वंचना से है, जो कभी किसी का भला नहीं करती।

3. (क) **''मेरे जीवन को प्रभावित करने वाला पारिवारिक सदस्य''**

परिवार में माता का स्थान सर्वोपरि है। पुत्र माता के ऋण से कभी उऋण नहीं हो सकता। कहा गया है कि पुत्र कुपुत्र हो सकता है, परंतु माता कभी कुमाता नहीं हो सकती। माँ एवं मातृभूमि को स्वर्ग से भी श्रेष्ठ बताते हुए श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा,

''अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते, जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।''

अर्थात् श्रीराम जी कहते हैं–''हे लक्ष्मण! मुझे स्वर्णयुक्त लंका में ज़रा भी रुचि नहीं है। यह लंका मुझे आकर्षित नहीं करती। मुझे तो जन्म देने वाली माँ तथा जन्मभूमि के चरणों में ही स्वर्ग प्राप्त होता है।''

माँ अपने पुत्र के लिए स्वयं कष्ट सहती है, उसकी रक्षा करती है, उचित पालन-पोषण करती है, उसे चलना सिखाती है और जब तक वह अपने पैरों पर खड़ा नहीं हो जाता है, तब तक वह उसका सही मार्गदर्शन करते हुए उसकी प्रथम गुरु होती है।

मेरे जीवन में तो मेरी माता का प्रमुख स्थान है। उन्होंने मेरी हर आवश्यकता को समझा तथा उसे पूरा किया है। मेरे स्कूल जाने के समय मुझे तैयार करने से लेकर गृहकार्य करने तक में मेरी सहायता की। मेरी माँ कहती है कि स्वस्थ मस्तिष्क स्वस्थ शरीर में ही रहता है। अतः वह मुझे शाम के समय खेलने के लिए अवश्य भेजती थी। वह मुझे संत-महापुरुषों के जीवन की कथाएँ सुनाकर मेरे चरित्र का निर्माण करती थी। मेरी माँ ने मुझे सत्य, न्यायप्रियता, ईमानदारी, परोपकार एवं गुरुजनों की आज्ञा का पालन करना सिखाया।

ईश्वर की प्रार्थना करने का भाव भी मेरे हृदय में तब ही जागा, जब मैं छुट्टी के दिनों में माँ के साथ मंदिर जाने लगा। जैसे शिवाजी का पालन-पोषण करते हुए, उचित संस्कार एवं मार्गदर्शन से उन्हें मराठा साम्राज्य का सम्राट, उनकी माँ जीजाबाई ने बनाया, वैसे ही मुझे भी इस समाज सेवा की ऊँचाई तक मेरी माँ ने ही पहुँचाया। उन्होंने मुझे कुमार्ग पर न चलने की शिक्षा देकर सदैव सन्मार्ग पर चलना सिखाया। मुझे मेरे अवगुणों से परिचित करवाकर और उन्हें दूर करके मेरे चरित्र निर्माण में सहायक बनीं। मेरे विचार से हमारे प्रत्यक्ष कोई ईश्वर है, तो वह माँ ही है।

अथवा

सुखद घटना जिसने मुझे नई सीख दी

मानव का संपूर्ण जीवन उसके जीवन में घटित घटनाओं का समन्वय है। जन्म से मृत्यु तक निरंतर घटनाएँ घटती रहती हैं। व्यक्ति प्रत्येक घटना से कुछ-न-कुछ सीखता है। ये घटनाएँ सुखद एवं दुःखद दोनों रूपों में घटित होती हैं। सुखद घटना जहाँ व्यक्ति के जीवन में उत्साह एवं उल्लास का संचार करती है, वहीं दुःखद घटना उसे उत्साह एवं आत्मविश्वास से विहीन बनाती है। यहाँ मैं अपने जीवन की उस सुखद घटना का वर्णन कर रहा हूँ, जिसने मेरे जीवन को एक नई दिशा दी तथा आत्मविश्वास में वृद्धि करके मेरे जीवन में नए उत्साह का संचार किया।

यह घटना उन दिनों की है, जब मैं आठवीं कक्षा का छात्र था। उन दिनों मेरे मन-मस्तिष्क पर गणित विषय का ऐसा आतंक था, कि उस विषय का नाम ही मुझे पसीने-पसीने कर देता था। विद्यालय में गणित की कक्षा में, मैं सबसे पीछे ही बैठता था। इसका एक ही कारण था– विषय के अध्यापक का अत्यंत कठोर स्वभाव। वार्षिक परीक्षा शुरू होने में केवल एक माह का समय शेष था। एक दिन मैं कालांश के बाद गणित अध्यापक से मिला तथा उन्हें अपनी समस्या बताई। उन्होंने मुझे उसी दिन से अपने घर आकर गणित विषय पढ़ने को कहा। मैं प्रतिदिन नियम से उनके घर पढ़ाई करने के लिए जाने लगा। उन्होंने मेरा मार्गदर्शन किया, जिसके परिणामस्वरूप मेरे मन से गणित विषय के प्रति यह विचार, कि मैं इस विषय में कभी सफल नहीं हो सकता, सदैव के लिए समाप्त हो गया। वर्तमान में, मैं दसवीं कक्षा का छात्र हूँ। गुरु जी की शिक्षा से प्रभावित होकर ही मैं पीसीएम की पढ़ाई करके आगे गणित विषय में ही कुछ करने की इच्छा रखता हूँ। आज भी मेरा मन उन श्रद्धेय गणित के अध्यापक जी के चरणों में झुक जाता है।

4. सेवा में,

मुख्य प्रबंधक,

दिल्ली परिवहन निगम, दिल्ली।

दिनांक 25 जनवरी, 20XX

विषय बस संवाहक करतार सिंह के साहस के विषय में।

महोदय,

मैं एक ज़िम्मेदार नागरिक होने के नाते आपको यह पत्र लिख रहा हूँ। मैं बस संवाहक करतार सिंह के साहस और कर्तव्य भावना के बारे में आपको एक संस्तुति प्रस्तुत करना चाहता हूँ। वह बहुत ही साहसी, दिलेर और भला इंसान है। उसके निम्नलिखित व्यवहार के कारण उसे सम्मानित किया जाना चाहिए।

मैं दिल्ली से आगरा की यात्रा कर रहा था। बस दिल्ली से शाम 6 बजे चली थी। लगभग 8 बजे हमारी बस भोजन-नाश्ते के लिए एक होटल में रुकी। अचानक कई गुंडों ने एक महिला को घेर लिया और रिवॉल्वर की नोक पर उससे जबर्दस्ती करने का प्रयास करने लगे। उस समय बस के अधिकांश यात्री खाने-पीने में व्यस्त थे। बस संवाहक करतार सिंह ने यह देखकर अकेले ही उन शस्त्रधारी गुंडों से न केवल महिला की अस्मिता की रक्षा की, वरन् उसका अन्य कीमती सामान भी लूटने से बचा लिया। बाद में शोर मचाकर उसने लोगों को इकट्ठा कर लिया और गुंडों को बंधक बनाकर पुलिस के हवाले कर दिया। पता चलने पर सबने राहत की साँस ली। एक बड़ी अनहोनी टल गई थी। सबने करतार सिंह के साहस की भूरि-भूरि प्रशंसा की। मैं चाहता हूँ कि करतार सिंह को विभाग की ओर से सम्मानित किया जाए, जिससे अन्य बस संवाहकों को भी प्रेरणा मिल सके।

धन्यवाद।

भवदीय

विजय सिंह

149/2, मोहन नगर

दिल्ली

अथवा

सेवा में,

संपादक महोदय,

नवभारत टाइम्स,

नई दिल्ली।

दिनांक 25 अप्रैल, 20XX

विषय दिन-प्रतिदिन बढ़ती महँगाई की समस्या के प्रति चिंता के विषय में।

महोदय,

मैं आपके लोकप्रिय दैनिक समाचार-पत्र के माध्यम से सरकार का ध्यान बढ़ती हुई महँगाई की तरफ़ आकर्षित करना चाहता हूँ।

आज चाहे सब्जी के दामों की बात करें, चाहे दूध इत्यादि रोज़मर्रा के काम आने वाली चीज़ों की बात करें, महँगाई आसमान को छू रही है। वेतन कम है तथा महँगाई लगातार बढ़ रही है। महँगाई रूपी दानव ने अपने विकराल बाहुपाश से हमें कस लिया है जिससे निकल पाना असंभव है। साबुन, दालें, तेल, चीनी, मसाले आदि की कीमतें निरंतर बढ़ रही हैं ऐसा जान पड़ता है मानो सरकार का इस बढ़ती महँगाई पर नियंत्रण ही नहीं रहा।

कृपया आप मेरे इस पत्र को अपने समाचार-पत्र में छापने का कष्ट करें, ताकि निरंतर बढ़ती महँगाई पर लगाम कसकर सरकार आम जनता के जीवन को सुखद बनाए।

सधन्यवाद।

भवदीय

क. ख. ग.

5. *(क)* एफ.एम. रेडियो का विस्तार सूचना, शिक्षा, राष्ट्र निर्माण तथा मनोरंजन के उद्देश्य के लिए हुआ।

(ख) **इंटरनेट** यह इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का सर्वाधिक सशक्त माध्यम है।

समाचार-पत्र यह प्रिंट मीडिया का सशक्त माध्यम है।

(ग) संपादकीय का शीर्षक शो-विंडो की भाँति होता है। यही कारण है कि शीर्षक को अत्यंत आकर्षक एवं सहज होना चाहिए, जिससे उसे पढ़कर पाठक संपादकीय पढ़ने में सहज रुचि लेने लगे।

(घ) कोई भी बड़ी ख़बर कम शब्दों मे और ख़बरों को रोककर सबसे पहले दर्शक तक पहुँचाना ही फ्लैश या ब्रेकिंग न्यूज कहलाता है।

(ङ) कुछ महत्त्वपूर्ण लेखक अपने विचारों को अखबार के स्तंभ में प्रस्तुत करते हैं। स्तंभ लेखन के अंतर्गत लेखक को अपने विषय का चुनाव करने की स्वतंत्रता होती है।

6. नाटक एक जीवंत माध्यम है। नाटक में कोई भी दो चरित्र जब आपस में मिलते हैं, तो उनके विचारों के आदान-प्रदान में टकराहट होना स्वाभाविक है। यही कारण है कि रंगमंच प्रतिरोध का सबसे सशक्त माध्यम है। वह कभी भी यथास्थिति को स्वीकार नहीं करता, इस कारण उसमें अस्वीकार की स्थिति भी बराबर बनी रहती है। जिस नाटक में असंतुष्टि, छटपटाहट, प्रतिरोध और अस्वीकार जैसे नकारात्मक तत्त्वों की जितनी ज्यादा उपस्थिति होगी, वह उतना ही सशक्त नाटक सिद्ध होगा।

अथवा

कहानी का संचालन उसके पात्रों के द्वारा ही होता है। पात्रों के गुण-दोष को उनका चरित्र-चित्रण कहा जाता है। प्रत्येक पात्र का अपना स्वरूप, स्वभाव और उद्देश्य होता है। पात्रों का अध्ययन कहानी की एक बहुत महत्त्वपूर्ण और आधा रभूत शर्त है। कहानीकार के सामने पात्रों का स्वरूप जितना स्पष्ट होगा, उतनी ही आसानी उसे पात्रों का चरित्र-चित्रण करने और उसके संवाद लिखने में होगी। पात्रों का चरित्र-चित्रण करने के लिए कहानीकार द्वारा पात्रों के गुणों का बखान तथा दूसरे पात्रों के संवाद के माध्यम से किया जा सकता है।

7. विद्यार्थियों पर दूरदर्शन का प्रभाव

आज दूरदर्शन हमारे जीवन का अनिवार्य अंग बन चुका है। रोटी-पानी की तरह दूरदर्शन का उपयोग करना दैनिकचर्या में आ चुका है। विद्यार्थी स्वभाव से जिज्ञासु और चंचल होते हैं, इसलिए वे दूरदर्शन पर जान छिड़कते हैं। सच तो यह है कि वे अपने खेल का समय काटकर इस पर न्योछावर कर देते हैं। उनके लिए दूरदर्शन मुख्य रूप से मनोरंजन का साधन है।

छात्र इस पर फिल्में देखते हैं, मनोरंजक धारावाहिक देखते हैं, रियल्टी शो देखते हैं तथा अजब-गजब कार्यक्रम देखकर भरपूर मनोरंजन करते हैं। यद्यपि दूरदर्शन शिक्षा-संबंधी कार्यक्रम भी प्रसारित करता है। डिस्कवरी, नेशनल ज्योग्राफी, समाचार चैनल तथा राष्ट्रीय दूरदर्शन जैसे कई चैनल विविध प्रकार के ज्ञानवर्द्धक कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं, परंतु सच यह है कि विद्यार्थी इन चैनलों को भी मनोरंजन के लिए ही देखते हैं।

जितनी देर तक ये मनोरंजन कर पाने में समर्थ होते हैं, उतनी देर तक ही इनका उपयोग किया जाता है। सच यही है कि दूरदर्शन को शुद्ध रूप से मनोरंजन का माध्यम माना जाता है, इसलिए इसका उपयोग सीमित मात्रा में होना चाहिए।

अथवा

समाचार लेखन हेतु निम्न आवश्यक तथ्यों का ध्यान रखा जाना अनिवार्य है

(i) समाचार लिखने से पूर्व उसकी पृष्ठभूमि का ज्ञान आवश्यक है।

(ii) समाचार प्राप्त होने के बाद उससे संबंधित अनेक पक्षों एवं तथ्यों को समाहित कर समग्रता के साथ लिखना अपेक्षित है।

समाचार लेखन में चार 'सकारों' का ध्यान रखना अपेक्षित है

(क) **सत्यता** समाचार सच्चाई पर आधारित होना चाहिए।

(ख) **स्पष्टता** समाचार अपने अर्थ को सरलता से समझा सके।

(ग) **संक्षिप्तता** समाचार को अति विस्तार से बचना चाहिए।

(घ) **सुरुचि** समाचार की भाषा, शैली एवं प्रस्तुति रोचक होनी चाहिए

(iii) समाचार अनुच्छेदों मे विभाजित होना चाहिए।

(iv) अनुच्छेद न तो अधिक बड़े तथा न ही अति संक्षिप्त या लघु होने चाहिए।

(v) एक अनुच्छेद में यथासंभव एक ही आयाम या पक्ष होना चाहिए।

(vi) समाचार में शब्दों की पुनरावृत्ति नहीं होनी चाहिए।

(vii) समाचार की भाषा में सामासिकता का गुण विद्यमान होना चाहिए।

(viii) समाचार लेखन में शब्दों का निरर्थक प्रयोग नहीं करना चाहिए।

8. ***(क)*** कवि अपनी प्रेयसी अथवा प्रेरणा के स्रोत से अपने रिश्ते को स्पष्ट करना चाहता है। वह अपनी प्रेयसी को अपनी स्मृति में लाता है। वह मानता है कि उसके प्रति कवि का असीम स्नेह कभी भी कम होने वाला नहीं है।

(ख) कवि के हृदय में इतना प्रेम कहाँ से उमड़ा है, यह स्वयं कवि को पता नहीं है। कवि यह जानना चाहता है। इसी कारण वह प्रश्न करता है कि क्या उसके हृदय में कोई झरना है? हालाँकि कवि को अहसास है कि यह झरना उसके प्रिय के प्रेम से ही उत्पन्न हुआ है।

(ग) मुसकाता चाँद से कवि का अभिप्राय प्रेयसी के मुसकाते सुंदर चेहरे से है। वह चेहरा जो सदैव आच्छादित रहता है। स्नेह-माधुर्य फैलाता रहता है। स्नेह वर्षा करने वाला सुखद चेहरा ही मुसकाते चाँद की तरह प्रतीत होता है।

अथवा

(क) कवि समाज में व्याप्त जाति प्रथा के विरुद्ध है। वह जाति-भेद को महत्त्व नहीं देता। कवि इसे रूढ़िवादी तथा विभाजनकारी प्रवृत्ति के रूप में देखता है।

(ख) प्राचीन ग्रंथों तथा स्मृतियों ने जाति से बाहर विवाह को अमान्य करार दिया। परंपरावादी ऐसे शादी-विवाह को मान्यता नहीं देते तथा ऐसा करने वालो को जाति से बहिष्कृत कर दिया जाता है। इसी कारण लोग शादी-विवाह में जाति की बात करते हैं।

(ग) कवि जाति तथा संप्रदाय के विभाजन को सामाजिक समता के लिए बाधक मानता है। वह किसी सामाजिक भेद की परवाह नहीं करता। यही कारण है कि कवि माँग कर खाने तथा हिंदू होने पर भी मस्जिद में सोने की बात करता है।

9. ***(क)*** 'पतंग' एक लंबी कविता है, जिसमें कवि आलोक धन्वा सुंदर दृश्य बिंबों के सहारे पाठक को एक नई दुनिया में ले जाते हैं। कविता धीरे-धीरे बिंबों के ऐसे वातावरण में प्रवेश करती है, जहाँ शरद ऋतु का चमकीला इशारा है, तितलियों की रंगीन दुनिया है एवं सभी दिशाओं में मृदंग बजते हैं। प्रकृति में आए परिवर्तनों को आलोक धन्वा सुंदर बिंबों के सहारे सामने लाने का प्रयास करते हैं। 'पृथ्वी घूमती बेचैन पैरों के पास' पंक्ति में दृश्य बिंब की गतिशीलता वास्तव में प्रकृति की गतिशीलता से जुड़ जाती है।

(ख) कवि शरद ऋतु का मानवीकरण करता है। दृश्य बिंबों के सहारे कवि यह दर्शाता है कि शरद् अपने चमकीले इशारों से पतंग उड़ाने वाले बच्चों के झुंड को बुलाता है तथा उनकी सुविधा के लिए आकाश को इतना मुलायम बना देता है कि पतंगें आकाश की ऊँचाई में पहुँचकर बच्चों को आनंदित कर देती हैं।

अथवा

(क) सरल लेकिन तत्सम प्रधान भाषा, छायावादी प्रभाव, गीतात्मकता, प्रतीकात्मकता आदि काव्यांश की शिल्पगत विशेषताएँ हैं। काव्यांश में वियोग शृंगार रस की अभिव्यक्ति हुई है।

(ख) ''मैं हाय, किसी की याद लिए फिरता हूँ''-पंक्ति का भाव यह है कि कवि को प्रेयसी की स्मृति एक ओर तो आनंदित करती है, जबकि दूसरी ओर उससे जुड़ी वेदनाएँ उसे भीतर से चुभती हैं, रूलाती हैं।

0. (क) कवि चिड़िया तथा उसके बच्चों के बीच के संबंध को दर्शाता है। कवि मानता है कि चिड़िया के बच्चे अपने घोंसलों से झाँककर भोजन की आशा में अपने माता-पिता की प्रतीक्षा कर रहे होते हैं। जब चिड़िया को अपने बच्चों के भोजन की चिंता का ध्यान आता है, तो उसकी गति और तीव्र हो जाती है।

(ख) कविता शब्दों की क्रीड़ा है। इस क्रीड़ा के माध्यम से कवि नवीन सृजन का अभियान प्रारंभ करता है। इसमें जड़, चेतन, अतीत, वर्तमान तथा भविष्य उपकरण बनते हैं। यह कार्य रचनात्मक ऊर्जा से संपन्न होता है। कविता की रचनात्मक ऊर्जा को कवि ने बच्चों की रचनात्मक ऊर्जा के समानांतर रखा है। जिस प्रकार बच्चों के खेल में किसी प्रकार की सीमा नहीं रहती, उसी प्रकार कविता भी असीम होती है।

(ग) 'कैमरे में बंद अपाहिज' कवि रघुवीर सहाय की रचना है। इस कविता में कवि ने समाचार माध्यमों के ढोंग को उजागर किया है। एक अपाहिज से ऐसे सवाल करना, जिससे उसकी मानसिकता को धक्का लगे, कहीं से भी उचित नहीं है, लेकिन मीडिया करुणा का मुखौटा ओढ़कर ऐसी क्रूरता को सामने लाती है, जो हमें नहीं दिखती। कविता में कवि ने अपाहिज के प्रति करुणा दिखाने वाले टेलीविज़न चैनलों की मुखौटाधर्मिता को सामने लाने का प्रयास किया है।

(घ) 'उषा' कविता में 'भोर के नभ' की तुलना 'राख से लीपे हुए चौके', 'नीले शंख' 'लाल केसर से युक्त काली सिल', 'लाल खड़िया चाक से लिप्त स्लेट' जैसे उपमानों से की गई है, क्योंकि कवि ने इन उपमानों के माध्यम से अंधकार के समाप्त होने का तथा प्रकृति में प्रतिपल आ रहे परिवर्तनों का रेखांकन करने का प्रयास किया है।

11. (क) भारतीय कला और सौंदर्यशास्त्र रसों पर आधारित हैं। रस-सिद्धांत के आधार पर मानवीय जीवन को व्याख्यायित करने की प्रक्रिया महत्त्वपूर्ण है। यह भारतीय सौंदर्यशास्त्र की एक उल्लेखनीय विशेषता है।

(ख) करुणा को हास्य में बदल देना एक ऐसे रस-सिद्धांत की माँग करता है, जो भारतीय परंपरा का हिस्सा नहीं है। भारतीय परंपरा में हास्य 'दूसरों' पर होता है। करुणा को हास्य से पूरी तरह अलग रखा गया है।

(ग) करुणा सद्व्यक्तियों को प्रतिकूल परिस्थिति में देखकर पैदा होती है। पर-संताप की स्थिति में करुणा का सृजन होता है। दूसरों को कष्ट में देखकर हमारे अंदर जिस मनोभाव का जन्म होता है, उसे करुणा कहते हैं।

अथवा

(क) भक्तिन का वास्तविक नाम लछमिन अर्थात् लक्ष्मी था, जो संपत्ति की स्वामिनी का सूचक है। लक्ष्मी का अर्थ है-धन की देवी, लेकिन उसी (भक्तिन) दशा अपने नाम से बिलकुल मेल नहीं खाती थी। उसके जीवन में धन का घोर अभाव था।

(ख) भक्तिन अपना लक्ष्मी नाम किसी को नहीं बताती, क्योंकि इस नाम की गुणवत्ता का असर उसके जीवन में कहीं भी दिखाई नहीं देता। लेखिका के अनुसार जीवन में प्रायः सभी को अपने नाम का विरोधाभास लेकर जीना पड़ता है, परन्तु भक्तिन अपना वास्तविक नाम किसी को नहीं बताती, इसलिए वह भक्तिन को समझदार समझती है।

(ग) 'शेष इतिवृत्त' का अर्थ है, संपूर्ण वर्णन। भक्तिन ने अपने जीवन के आरंभ से अब तक का पूरा वृत्तांत लेखिका को बता दिया था।

12. (क) लेखिका के घर जब भक्तिन काम करने आई थी, तो वह निपट भोली तथा सीधी लगती थी। जैसे-जैसे लेखिका का भक्तिन से संपर्क बढ़ा, उसकी दुर्बलताएँ भी सामने आईं। जब कभी लेखिका के पैसे गायब हो जाते तो पूछने पर भक्तिन उन्हें सँभालकर रखने की बात करती। इसी कारण लेखिका ने कहा कि भक्तिन अच्छी है, यह कहना कठिन होगा, क्योंकि उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं।

(ख) *बाज़ार का जादू चढ़ने से मनुष्य पर निम्नलिखित प्रभाव पड़ते हैं*

- मनुष्य फिजूलखर्ची करने लगता है।
- ज़रूरत नहीं रहने पर भी अनावश्यक सामान खरीदता है।
- वस्तु की सही जाँच-परख का विवेक नहीं रह जाता है।
- बाज़ार पहुँचते ही विभिन्न सामानों की ज़रूरत महसूस होने लगती है।

बाज़ार का जादू उतरने पर निम्नलिखित प्रभाव पड़ते हैं

- व्यक्ति का बजट बिगड़ जाता है।
- वह केवल अपनी अत्यधिक ज़रूरत की वस्तुएँ ही खरीदता है।
- बाज़ार की चकाचौंध की निस्सारता को व्यक्ति समझ लेता है।

(ग) गाँव में महामारी फैलने पर लुट्टन का ढोल लोगों की जिजीविषा को बरकरार रखने का महत्त्वपूर्ण साधन था। लुट्टन के दो बेटे महामारी के कारण मर गए, किंतु उनकी मौत के बाद भी लुट्टन ने ढोल बजाना नहीं छोड़ा।

ढोल की आवाज़ लोगों में जीने की इच्छा जगाती थी। लुट्टन चाहता था कि गाँव वाले मौत की विभीषिका से न घबराएँ। इसी कारण वह अंत तक ढोल बजाता रहा।

(घ) लेखक ने राजकपूर को चार्ली चैप्लिन का भारतीयकरण कहा है। राजकपूर की फ़िल्मों में चार्ली की छाप मिलती है। राजकपूर ने अपनी कई फ़िल्मों में चार्ली के अनुकरण की कोशिश की है।

13. (क) ऐन फ्रैंक ने अपनी डायरी में एक निर्जीव गुड़िया 'किट्टी' को संबोधित करते हुए पत्र लिखे। इन पत्रों में तत्कालीन ऐतिहासिक परिस्थितियों का भावनात्मक विवरण सामने आया है। ऐन ने यहूदियों पर हो रहे अत्याचारों का वर्णन किया है। द्वितीय विश्वयुद्ध की यातनाओं के बीच ऐन पारिवारिक स्तर पर भी पुरुष-वर्चस्व को झेल रही स्त्रियों की स्थिति का विवरण अपनी डायरी में करती है

ऐन ने गुप्त आवास में बिताए गए दो वर्षों के अपने अनुभव, निजी सुख-दुःख तथा भावनात्मक उथल-पुथल को सामने रखा है। ऐन लिखती है, एक औरत को बच्चा पैदा करने में उतने ही कठिन दौर से गुज़रना पड़ता है, जितना युद्ध-भूमि में एक सैनिक को, किंतु स्त्रियों को बदले में केवल दुःख मिलता है। उसे इस बात का विश्वास है कि एक दिन यह दुनिया औरतों के प्रति अपनी मान्यता बदलेगी।

'ऐन की डायरी' एक ओर ऐतिहासिक दौर का जीवंत दस्तावेज़ है, तो दूसरी ओर उसके निजी सुख-दुःख तथा मानसिक उथल-पुथल का चित्रण भी। यहाँ दोनों का फर्क मिट जाता है।

(ख) कहानी के आधार पर लेखक यह कहना चाहता है कि आज का जीवन अर्थ (धन) पर आधारित है। आज संबंधों का टिकना आर्थिक स्थिति बेहतर रहती है, तब तक सब ठीक रहता है और यदि धन का अभाव होने लगे, तो संबंधों में भी धीरे-धीरे खटास आने लगती है। यही स्थिति यशोधर पंत के परिवार की भी है।

उनके परिवार वाले भी उनकी ऊपर की कमाई चाहते हैं, लेकिन यशोधर पंत सिद्धांतवादी व्यक्ति हैं और उन्होंने दूसरे तरीके से धन कमाने की कभी सोची भी नहीं। सिद्धांतों के कारण उन्होंने अपने कोटे का फ्लेट भी नहीं लिया था इन सभी बातों से उनके बच्चे उनसे परेशान (खिन्न) रहते हैं। उनका बड़ा बेटा भूषण विज्ञापन कंपनी में ₹ 1500 प्रतिमाह पर काम करता है।

यशोधर बाबू और भूषण के बीच विचारों की गहरी खाई है। भूषण अकसर किसी काम के बाद कह देता था कि पैसे मैं दे दूँगा। यह बात यशोधर बाबू के गले के नीचे कभी नहीं उतरती अर्थात् धन के कारण उनके परिवार में भी तनाव की स्थिति बनी रहती है। आधुनिक युग में धन का महत्त्व दिनोंदिन बढ़ता ही जा रहा है।

14. *(क)* यशोधर बाबू की पत्नी समय को अच्छी तरह पहचानती हैं। वह जानती हैं कि बच्चों की सहानुभूति तभी मिल सकती है, जब उनके विचार तथा रहन-सहन के अनुकूल चला जाए। व्यावहारिक ज्ञान इसकी स्वीकृति देता है। समय के अनुसार, स्वयं को ढाल लेने के कारण ही यशोधर बाबू की पत्नी बच्चों के साथ बेहतर तालमेल बिठा पाती हैं, जबकि यशोधर बाबू सामंजस्य नहीं बिठा पाने के कारण परिवार के अन्य सदस्यों के साथ अपने को अनुपयुक्त (इंप्रॉपर) महसूस करते हैं। वह किशनदा के प्रभाव से आदर्शवादी तथा परंपरावादी बने रहते हैं, जिससे नई परंपराएँ उन्हें 'समहाउ इंप्रॉपर' लगती हैं।

(ख) सिंधु सभ्यता साधन संपन्न थी। यह एक शहरी सभ्यता थी, जहाँ वाणिज्य-व्यापार का विस्तृत ढाँचा मौजूद था। यह विस्तृत ढाँचा कहीं भी बनावटी या कृत्रिम नहीं लगता। इस सभ्यता के निर्माण की अपनी तकनीक थी। इसमें बिना किसी आडंबर के अद्भुत निर्माण की प्रक्रिया को गति दी गई। सभ्यता स्थलों की खुदाई से जिस प्रभाव का पता चलता है, वे उसकी साधन संपन्नता, किंतु आडंबरहीन भव्यता को सामने लाते हैं। वहाँ से खुदाई में भव्यता की पुष्टि करने वाले अवशेष; जैसे– मंदिर, राजमहल, पिरामिड आदि प्राप्त नहीं हुए हैं।

(ग) 'जूझ' का कथानायक किशोर छात्रों के लिए एक आदर्श प्रेरणास्रोत कहा जा सकता है। कथानायक आनंदा अत्यंत समझदार एवं होशियार विद्यार्थी था। वह कभी-भी कक्षा में अनुत्तीर्ण नहीं हुआ था, किंतु उसके पिता ने खेतों में काम न करने व दिनभर रखमाबाई के यहाँ बैठने की अपनी दिनचर्या के कारण उसे स्कूल जाने से मना कर दिया।

ऐसी जटिल परिस्थितियों में भी वह शिक्षा प्राप्ति के लिए प्रयास करता है। वह दत्ता जी राव देसाई से अनुरोध करते हुए अपने पिता को उसे स्कूल भेजने के विषय में समझाने के लिए कहकर किसी तरह पढ़ने की अनुमति लेता है तथा पढ़ाई के साथ वह खेती का काम भी करता है। उसके पास धन का नितांत अभाव है। उसके सहपाठी भी उसके पहनावे को लेकर उसकी खिल्ली उड़ाते हैं, फिर भी वह शिक्षा प्राप्त करने में सफल होता है। इसी प्रकार किशोर-किशोरियों को भी अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मान-सम्मान की चिंता किए बिना कठोर परिश्रम करना चाहिए। उसके चरित्र से समस्त किशोर विद्यार्थियों को शिक्षा ग्रहण करने की प्रेरणा लेनी चाहिए।

(घ) ऐन फ्रैंक की डायरी की विशेषताएँ यह हैं कि यह लेखन की गहराई और नाज़ी दमन के दस्तावेज़ के रूप में अपना विशेष महत्त्व रखती है, क्योंकि यह डायरी इतिहास के एक सबसे आतंकप्रद और दर्दनाक अध्याय के साक्षात् अनुभव का बयान करती है। यहाँ उस भयावह दौर को किसी इतिहासकार की निगाह से नहीं, सीधे भोक्ता की निगाह से देखते हैं। यह भोक्ता ऐसा है, जिसकी समझ और संवेदना बहुत गहरी तो है ही, उम्र के साथ आने वाले दूषणों से पूरी तरह अछूती भी है।

इस डायरी में भय, आतंक, भूख, प्यास, मानवीय संवेदनाएँ, प्रेम, घृणा, बढ़ती उम्र की तकलीफ़ें, हवाई हमले के डर, पकड़े जाने का लगातार डर, तेरह साल की उम्र के सपने, कल्पनाएँ, बाहरी दुनिया से अलग-थलग पड़ जाने की पीड़ा, मानसिक और शारीरिक ज़रूरतें, हँसी-मज़ाक, युद्ध की पीड़ा; अकेलापन सभी कुछ है। यह डायरी यहूदियों पर ढाए गए जुल्मों का एक जीवंत दस्तावेज़ है। यही कारण है कि यह पुस्तक पिछले 50 वर्षों में विश्व में सबसे अधिक पढ़ी गई पुस्तकों में से एक है।